बेबून और उसका बच्चा

प्राणी भी ममता रखते हैं अपनी संतानों के प्रति

चंद्रशीला गुप्ता

मानव एवं अन्य स्तनधारी माता-पिता अपने शिशुओं की देखभाल में काफी समय गुज़ारते हैं। दूसरी ओर, अधिकांश अन्य जन्तु अपने बच्चों की शायद ही कोई परवाह करते हैं। इसकी पूर्ति वे ज़्यादा संख्या में अण्डे-बच्चे देकर करते हैं, जिनमें से कुछ तो वयस्क बनने में सफल हो ही जाते हैं। जैसे सी-अर्चिन समुद्र में लाखों अण्डाणु एवं शुक्राणु बहा देते हैं। उनमें से कुछ ही अण्डे निषेचित होते हैं और निषेचित अण्डों में से भी कुछ ही विकसित होकर प्रौढ़ हो पाते हैं। मगर कई अन्य प्राणी अपनी संतान का जीवित रहना सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न उपाय करते हैं।

कुछ प्राणी शिशुओं के लिए अण्डों के साथ योक के रूप में भोजन पैक कर देते हैं। योक उनकी संतानों के लिए शुरुआती दिनों का भोजन है। जब नन्हीं मछलियां अण्डे के खोल से बाहर आती हैं तो अपने साथ योक लिए घूमती हैं। इस प्रकार तब तक के भोजन की व्यवस्था हो जाती है जब तक कि वे स्वयं भोजन पकड़ने लायक न हो जाएं।

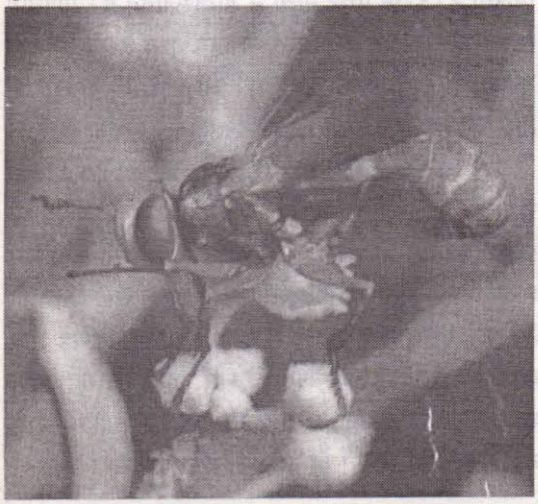

एक बर्र

सरीसृपों (जैसे घड़ियालों और कछुओं) में योक की मात्रा ज़्यादा होती है और पक्षियों में ऑस्ट्रिच का अण्डा तो 800 ग्राम योक लिए रहता है।

कुछ कीट अपने शिशुओं की देखभाल में इससे भी आगे चलते हैं। जैसे यह सुनिश्चित करने के लिए कि योक खत्म हो जाने के बाद भी उनके बच्चों को खाना उपलब्ध रहे, मादा बर्र एक गड्ढा खोदकर उसमें कुछ टिड्डे बेहोश करके डाल देती है और उन्हीं पर अण्डे देकर गड्ढे को बन्द कर देती है। जब अण्डों से इल्लियां निकलती हैं तो उन्हें भोजन तैयार मिलता है।

इससे भी आगे, स्तनधारी बच्चों को अपने शरीर में तब तक धारण किए रहते हैं जब तक कि वे बाहरी वातावरण में जीने लायक न हो जाएं। चूहे कुछ हफ्ते व हाथी एवं मनुष्य महीनों अपने बच्चों को गर्भ में रखते हैं। स्तनधारियों के समान ही एक मछली पहले निषेचित अण्डों को और बाद में उनसे निकले बच्चों को अपने मुंह में संभाले रखती है। बच्चे सिर के आसपास तैरते रहते हैं और खतरा भांपते ही मां के मुंह की सुरक्षित खोह में चले जाते हैं। कुछ मेंढक व टोड विकसित होते बच्चों को अपने शरीर में ही विशिष्ट थैली में संभाले रखते हैं।

अनेक प्राणी जन्म के बाद कई दिनों, हफ्तों या महीनों तक अपने शिशुओं की देखभाल करते हैं ताकि उन्हें खाना, वृद्धि के लिए सही तापमान व दुश्मनों से सुरक्षा मिलती रहे। माता-पिता यह सब करने में काफी कष्ट भी झेलते हैं। अनेक छोटे पक्षी अपने चूज़ों को दिन में 11-12 बार खाना खिलाते हैं। स्तनधारी माताओं की तो समस्या और भी

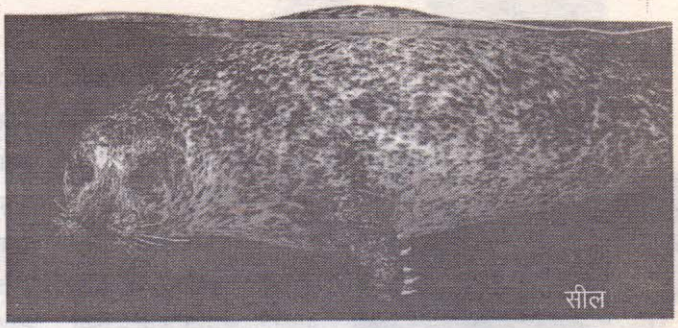
सील

ज़्यादा होती है। वे जितना खाती हैं उसका थोड़ा हिस्सा ही दूध के रूप में शिशु को पहुंचता है। फलस्वरूप दूध पिलाने वाली माताओं को सामान्य से दुगना या उससे भी ज़्यादा खाना पड़ता है। तथापि मां के शरीर से मिलने वाली दूध की मात्रा विस्मयजनक है। भूरी सील माताएं अपने एक बच्चे को 17-18 दिन दूध पिलाती हैं, इस दौरान बच्चों का वज़न 50 किलो तक हो जाता है। इस पूरे काल में मां पूर्ण उपवास पर रहती है और काफी दुबली हो जाती है।

वैसे तो स्तनधारियों में बच्चों की देखभाल का ज़िम्मा मां का ही होता है पर हमेशा ऐसा नहीं होता है। मार्मोसेट नामक बंदर में पिता, रीसस बंदरों में बड़े भाई-बहन और मौसी, और बंदरों की किसी-किसी जाति में समूह का कोई भी सदस्य बच्चों की देखभाल करने में मदद करता है।

जो प्राणी जल्दी-जल्दी बच्चे पैदा करते हैं, प्राणियों की दुनिया में उन्हें सफल माता-पिता माना जाता है, कम बच्चे जनने वालों को कम सफल माता-पिता माना जाता है। कुछ अन्य कारक जैसे सूखा या महामारी भी मातृत्व को नियंत्रित करते हैं।

कुछ प्राणियों में एक बार में अण्डे या बच्चों की संख्या माता चुन सकती है। जैसे मादा स्विफ्ट सामान्यतः एक बार में तीन अण्डे देती है पर वह चाहे तो तीन से कम भी दे सकती है। सवाल यह है कि वे ज़्यादा अण्डे क्यों नहीं देतीं? क्या ज़्यादा अण्डे देने वाली मां कम अण्डे देने वाली मां से ज़्यादा सफल नहीं होगी? लेकिन वस्तुतः ऐसा होता नहीं है। जब मादा स्विफ्ट को कृत्रिम तौर पर ज़्यादा अण्डे देने के लिए प्रेरित किया गया तो उसे ज़्यादा चूज़ों के पोषण में काफी दिक्कतें आईं। दो तीन चूज़े मर भी गए। निष्कर्ष निकाला गया कि तीन अण्डे देने वाली माताएं अपने बच्चों को बड़ा करने में अधिक सफल होती हैं।

माता अपने बच्चों के बीच अंतराल को भी नियंत्रित कर सकती है। वह चाहे तो जल्दी ही पुनः समागम कर अण्डे दे सकती है या पुराने चूज़ों के साथ रहकर उनकी देखभाल कर सकती है। यदि वह चूज़ों के साथ रहती है तो सभी चूज़ों के वयस्क हो पाने की संभावना बढ़ जाती है लेकिन साथ ही उसके जीवन काल में संतानों की संख्या कम होती है। यहां माता यही कर सकती है कि वह चूज़ों के साथ अति आवश्यक समयावधि तक रहे लेकिन इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि चूज़े भी मां से अलग होना चाहेंगे। वे तो मां के साथ ही बेहतर रह पाते हैं। परिणाम यह होता है कि मां बच्चों को छोड़कर जाना चाहती है और बच्चे मां से बिछुड़ना नहीं चाहते। यह झड़प अनेक पक्षियों में देखने को मिलती है।

अनेक जन्तुओं में नवजात बिल्कुल असहाय होते हैं। वे मां के द्वारा दिए भोजन को खाने के अलावा कुछ नहीं कर पाते हैं। शिशु चिम्पैंज़ी केवल अपनी मां के निपल से दूध चूस सकता है। यदि निपल उसके मुंह के संपर्क में न आ पाए तो वह अपना सिर इधर-उधर घुमाता रहता है। अतः मां को इनकी देखभाल करनी होती है, उन्हें गिरने से बचाना होता है, साफ करना होता है, सुरक्षा करनी पड़ती है। जैसे-जैसे बच्चे

मादा सील

नर सील

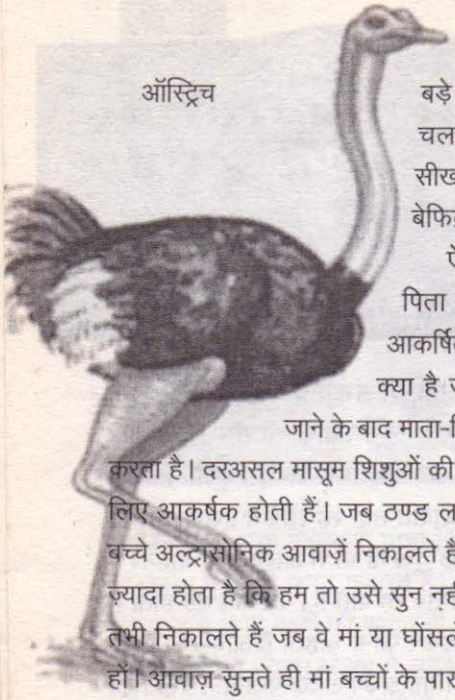

ऑस्ट्रिच

बड़े होते जाते हैं, दौड़ना, चलना या तैरना आदि सीखते जाते हैं माता-पिता बेफिक्र होते जाते हैं।

ऐसा क्या है जो माता-पिता को बच्चों के प्रति आकर्षित करता है और ऐसा क्या है जो बच्चों के बड़े हो जाने के बाद माता-पिता को उनसे विमुख करता है। दरअसल मासूम शिशुओं की मुद्राएं माता-पिता के लिए आकर्षक होती हैं। जब ठण्ड लगती है तब चूहों के बच्चे अल्ट्रासोनिक आवाज़ें निकालते हैं जिनका पिच इतना ज़्यादा होता है कि हम तो उसे सुन नहीं पाते। ये आवाज़ें वे तभी निकालते हैं जब वे मां या घोंसले की गर्मी से वंचित हों। आवाज़ सुनते ही मां बच्चों के पास आती है।

वयस्कों की तुलना में शिशुओं के चेहरे ज़्यादा गोलाई लिए हुए और बड़ी बड़ी उभरी आंखों वाले होते हैं, जिससे वे मासूम नज़र आते हैं। इस वजह से भी बच्चे माता-पिता को आकर्षित करते हैं। कई शिशु वानरों का रंग माता-पिता से अलग होता है। बेबून के बच्चे काले व गुलाबी होते हैं जबकि वयस्क जेतूनी हरे रंग के होते हैं। ये बच्चे न केवल अपने माता-पिता वरन समूह के दूसरे सदस्यों के लिए भी आकर्षण का केंद्र होते हैं और दूसरे सदस्य अक्सर मां से छुपकर बच्चों को उठा ले जाते हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है और उसका रंग काले गुलाबी से बदलकर हरा होता जाता है, वयस्कों का उसके प्रति व्यवहार बदलता जाता है, ममत्व भी कम होता जाता है।

बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ ही माता-पिता उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद करते हैं। बेबून माता दो हफ्ते के बच्चे को विभिन्न खेलों में मगशूल कर उसे छोड़कर थोड़ी दूर तक जाती है, फिर मुड़कर देखती है। ताकि बच्चे के मन में सुरक्षा का भाव बना रहे साथ ही वे किसी खतरे में न पड़ जाएं। इस प्रकार बच्चे को मां से अलग अकेले रहने की आदत डाली जाती है। धीरे-धीरे मां बच्चे को ज़्यादा आहार देकर अकेला छोड़ती है और अक्सर उसे दूध पिलाने से इंकार कर देती है ताकि वह अच्छी तरह खाना शुरू कर दे। शिशुओं को आत्मनिर्भर बनाने की यह प्रक्रिया, बंदरों और वानरों में धीरे-धीरे होती है। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*

मनीप्लांट से गृहसज्जा

डॉ. एन. के. बौहरा

प्रायः मनीप्लांट हर घर में पाया जाता है। यह गमलों, बोतलों, डिब्बों या किसी भी खाली पात्र में लगाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि मनीप्लांट की बढ़वार के साथ-साथ घर की धन-संपदा में भी वृद्धि होती है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि मनीप्लांट चोरी करके लगाएं तो और लाभ होता है। वैसे अधिकांश घरों में इसे इसकी सुन्दर एवं आकर्षक पत्तियों के कारण ही लगाया जाता है।

मनीप्लांट को वानस्पतिक भाषा में *सिडॉप्सिस ओरियस* कहा जाता है तथा यह पत्तियों के आकार एवं आकृति के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। भारत में पाई जाने वाली किस्में इस प्रकार हैं -

1. **गोल्डन क्वीन** हल्के पीले धब्बों युक्त पत्तियों वाली लोकप्रिय किस्म है।

2. **मार्बल क्वीन** की पत्तियां, सुन्दर, सफेद संगमरमरी रंग की एवं हल्के हरे धब्बों वाली होती है।

3. **ग्रीन ब्यूटी** की पत्तियां चिकनी हरे रंग वाली एवं सुन्दर दिखती है।

4. **सिल्वरमून** का नाम इसकी चांदी की तरह चमकीली क्रीम रंग की आकर्षक धब्बे वाली पत्तियों के कारण है।

5. **मेक्रोफिला** भी एक लोकप्रिय किस्म है। इसकी पत्तियां बड़े आकार की पीले धब्बे वाली होती हैं।

मनी प्लांट को किसी भी प्रकार की भूमि में, बरामदे में, पानी से भरी कांच की बोतलों में, जीने या कमरों में, धूप या छांव वाले स्थानों पर लगाया जा सकता है। इसकी अच्छी बढवार के लिए हल्की दुमट, उपजाऊ एवं नमीयुक्त मिट्टी उपयुक्त रहती है। इसे अंधेरे कमरे में बिजली के बल्ब की